डॉ. पी. एस. पाटील,
अध्यक्ष, हिंदी विभाग,
शिवाजी विश्वविद्यालय,
कोल्हापुर – 416 004.

संस्तुति

मैं संस्तुति करता हूँ कि श्री हिंदुराव रामचंद्र घरपणकर का "गोपालदास सक्सेना 'नीरज' के काव्य में मानवतावाद" लघु शोध–प्रबंध परीक्षणार्थ अग्रेषित किया जाए ।

कोल्हापुर :

तिथि : 30–06–1997.

अध्यक्ष
हिन्दी विभाग,
शिवाजी विश्वविद्यालय,
कोल्हापुर – ४१६ ००४

शिवाजी विश्वविद्यालय (हिन्दी विभाग) कोल्हापुर

प्राचार्य डॉ. आनंद वास्कर,
आचार्य जावडेकर शिक्षणशास्त्र
महाविद्यालय,
गारगोटी
तिथि : 30/06/97

** प्र मा ण प त्र **

मैं प्रमाणित करता हूँ कि श्री हिंदुराव रामचंद्र घरपणकर ने मेरे निर्देशन में "गोपालदास सक्सेना 'नीरज' के काव्य में मानवतावाद" लघु शोध-प्रबंध, शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर की एम्.फिल. (हिंदी) उपाधि के लिए लिखा है । यह कार्य पूर्व योजनानुसार संपन्न हुआ है और इसमें शोध-छात्र ने मेरे सुझावों का पूर्णतः पालन किया है । जो तथ्य लघु शोध-प्रबंध में प्रस्तुत किए हैं, मेरी जानकारी के अनुसार सही हैं । शोध छात्र के कार्य से मैं पूर्णतः संतुष्ट हूँ ।

गारगोटी ।

तिथि : 30-06-1997.

शोध - निर्देशक,

(प्राचार्य डॉ. आनंद वास्कर)

// प्र ख्या प न //

"गोपालदास सक्सेना 'नीरज' के काव्य में मानवतावाद" लघु शोध–प्रबंध मेरी मौलिक रचना है, जो एम्.फिल. (हिंदी) उपाधि के लिए प्रस्तुत की जा रही है। यह रचना इससे पहले शिवाजी विश्वविद्यालय या अन्य किसी विश्वविद्यालय की उपाधि के लिए प्रस्तुत नहीं की गयी है।

गारगोटी ।

तिथि : 30 जून 1997.

शोध – छात्र,

(श्री. हिंदुराव रामचंद्र घरपणकर)

प्राक्कथन

-: प्राक्कथन :-

"हिंदी की कविता स्त्री सरिता आदिकाल में. एक हाथ में तलवार और दूसरे हाथ में लेखानी लेकर रणांगन में वीर योद्धाओं के गीत गाती रही। भक्तिकाल में. यही कविता स्त्री सरिता एक हाथ में वीणा और दूसरे हाथ में जपमाला लेकर मंदिर और मस्जिद में भगवान का गुन - गान करने लगी। रीतिकाल में आने पर उसके हाथ में न तलवार रही और न ही वीणा और जपमाला सिधी पैरों में घुंघरू बांधकर राजाओं के राजमहलो में चांदी के चंद टूकडों पर नाचने लगी। वही कविता स्त्री सरिता आधुनिक काल में आकर जन - सागर में विलीन होकर आम आदमी के सुख - दु:खों के गीत गाने लगी।"

आधुनिक काल के कवियों में अधिकांश कवियों ने मानव को सुख - दु:खों का विषय बनाया। कहीं कवि है जिन्होने मानव की मानवता को अंकित करने का प्रयास किया।

स्कूली दिनो से मैं हिंदी के ऐसे कुछ गीत सुनता आया, जिनमें मानवतावाद था। "यह गीत किसके है! और क्या मानवतावाद है, मुझे मालुम नही था।" बी. ए, बी. एड. तथा एम्. ए. हिंदी होने के पश्चात हिंदी की कविता में मानवतावाद ढुंढना सुरु किया।

"नीरज" के मानवतावादी गीतों का अर्थबोध होने लगा। "पहचान" फिल्म का मशहूर गीत ---

"पर यही अपराध मैं हर बार करता हूँ,
आदमी हूँ आदमी से प्यार करता हूँ।"

मेरे मनमें घर कर बैठा यही कारणों से एम. फिल. में लघु शोध-प्रबंध का विषय तय किया "गोपालदास सक्सेना "नीरज" के काव्य में मानवतावाद।"

कवि नीरज तथा उनके काव्य से संबंधित निम्नांकित संशोधन हुआ है।

१. विश्वम्भर मानव ३ : "नयी कविता नये कवि" लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद - १९६८.

२. क्षेमचंद्र सुमन : "आज के लोकप्रिय हिंदी कवि "नीरज" आत्माराम एन्ड सन्स दिल्ली - १९७२.

३. डॉ. सुधा सक्सेना : "नीरज व्यक्तित्व कृतित्व" प्रकाशन प्रगति आगरा.

४. डॉ. दुर्गाशंकर मिश्र : "नीरज का काव्य : एक विश्लेषण" प्रकाशन हैदराबाद १९८५.

५. डॉ. सरजूप्रसाद मिश्र : "नीरज" की काव्य साधना - कोल्हापुर सितम्बर १९७५

६. श्री निकम : "नीरज" व्यक्तित्व - कृतित्व" पी. एच. डी. शोध-प्रबंध, शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर।

अब तक किसीने नीरज के काव्य-संग्रहों में मानवतावादी कविता का रूप नहीं दिखाया। इसलिए मैंने अनुसंधान के लिए "गोपालदास सक्सेना "नीरज" के काव्य में मानवतावाद" विषय चुना है। जिज्ञासा हर खोज की जननी है। इसी जिज्ञासा को लेकर ही मैंने अपना कार्य आरंभ किया। फलस्वरूप यह होता है कि जिन प्रश्नों का उत्तर प्राप्त करने के लिए मैं यह लघु - शोध कार्य पूरा करने में व्यग्र और व्यस्त रहा वे इस प्रकार हैं --

१. नीरज की कविता में मानवतावाद का स्वरूप क्या होता है ?

२. क्या उनके सभी काव्य संग्रहों में मानवतावाद का स्वर मिलता है ?

मैंने इन प्रश्नों के उत्तर उपसंहार में अंतिम निष्कर्ष के रूप में दिये हैं । फिर भी मेरा संशोधान पूर्व अनुमान है कि नीरज के सभी काव्यसंग्रहों में कम अधिक मात्रा में मानवतावादी दृष्टिकोन सफलता से स्पष्ट हुआ है । अध्ययन की सुविधा की दृष्टि से मैंने प्रस्तुत विषाय को निम्न अध्यायों में विभाजित किया हैं - -

प्रथम अध्याय :- "नीरज" व्यक्तित्त्व एवं कृतित्त्व"

के अंतर्गत मैंने नीरज का जीवन परिचय, जन्म तथा नामकरण, शैशव व किशोरावस्था, शिक्षा - दिक्षा । सामान्य व्यक्तित्त्व में वेशभूषा, आत्मविश्वास, साहसिकता, भावुकता, सहानुभूति, स्वाभिमान, अध्ययन-प्रेमी जीवन में हार न मानना, मानवप्रेम सबसे बडा धर्म है, काव्य में उधार विचार लेने वाले कवियों पर व्यंग्य, हिंदी उर्दू का झगडा मिटाया, शीघ्र कवि, विश्व - शांति की चाह, काव्यपाठ । समग्र व्यक्तित्त्व-ऐंक मूल्यांकन । जीवन दर्शन एवं कृतित्त्व में मृत्युवादी जीवन दर्शन, मानवतावादी दर्शन, समाज दर्शन, धर्म दर्शन, राजनीति दर्शन । पत्राकारिता । नीरज के जीवन की प्रमुख घाटनाएँ, निष्कर्ष आदि पक्षों का विवेचन किया गया है ।

द्वितीय अध्याय :- "मानवतावाद स्वरूप एवं परिभाषा" के अंतर्गत - मानव और मानवता, मानवता - व्याकरणिक व्युत्पत्ति और अर्थ, "मानव" शब्द की व्युत्पत्ति और अर्थ मानवतावाद - अर्थबोधा और अर्थविस्तार, मानवतावाद की परिभाषा, मानवतावाद का स्वरूप, मानवविज्ञान और मानवतावाद, शरीर विज्ञान और मानवतावाद, मनोविज्ञान और मानवतावाद, समाजविज्ञान और मानवतावाद, राजनीतिशास्त्रा और मानवतावाद, धर्म दर्शन एवं अध्यात्म तथा मानवतावाद, सौंदर्यशास्त्रा और मानवतावाद, राष्ट्रवाद और मानवतावाद, आदर्शवाद और मानवतावाद, यथार्थवाद और मानवतावाद, समाजवाद और मानवतावाद, अस्तित्त्ववाद और मानवतावाद । मानवतावाद की विशेषताएँ। निष्कर्ष, आदि तत्वों का विवेचन किया गया है।

तृतीय अध्याय :- "आधुनिक हिंदी कविता में मानवतावाद का स्वरूप"

के अंतर्गत हिंदी में मानवतावाद, आधुनिक काल मे मानवतावाद हिंदी की आधुनिक कविता में विकसित मानवतावादी प्रवृत्तियों का सिंहावलोकन, संक्रांतिकाल : भारतेन्दु युग, प्रबोधा युग : द्विवेदी युग, सूक्ष्म शांतियुग-छायावाद, भावकविता : रहस्यवाद- मर्म-कविता, क्रांतियुग : प्रगतिवाद - अभ्युदय कविता : प्रयोग-युग : प्रयोगवाद : अधिवास्तविक कविता, नवतायुग : नई कविता, निम्न सूचित कवियों का मूलस्वर मानवतावाद ही है. निम्न - सूचीत कवियों का अभिव्यंग्य अंशत: मानवतावादी है । निष्कर्ष, आदि तत्त्वों का विवेचन किया गया है ।

चतुर्थ अध्याय :- "नीरज के काव्य में मानवतावाद"

के अंतर्गत काव्य कृतियों का सामान्य परिचय, कवि नीरज का मानवतावाद और आलोचक, मानवतावाद और कवि नीरज - नदी किनारे, लहर पुकारे, बादर बरस गयो, प्राणगीत, दर्द दिया है, नीरज की पाती, दो गीत, आसावरी, मुक्तकी, गीत भी अगीत भी, फिर दीप जलेगा एवं तुम्हारे लिए आदि काव्यसंग्रह में से मानवतावाद के उदा. प्रस्तुत किये गये हैं ।

उपसंहार -

सभी अध्यायों के विवेचन के उपरांत मैंने उपसंहार में अपना निष्कर्ष एवं लघु शोधा-प्रबंधा का पुरा सारांश प्रस्तुत किया है । अंत में मैने "संदर्भ ग्रंथ - सूची" दी है ।

मेरी इस लघु शोधा -प्रबंध की मौलिकताएँ निम्नलिखित है - -

१. संपूर्ण विवेचन उपलब्धा सामग्री तथा प्रत्यक्षा अध्ययन पर आधारित है ।

२. मानवतावाद स्वरूप एवं परिभाषा पर प्रकाश डाला गया है ।

३. आधुनिक काल में मानवतावाद और हिंदी की आधुनिक कविता में विकसित मानवतावादी प्रवृत्तियों को स्पष्ट किया गया है ।

४. प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध का शीर्षक के अनुसार मानवतावादी काव्य का दिग्दर्शन किया गया है ।

-:: ऋ ण नि र्दे श ::-

प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध की पूर्ति का श्रेय मैं श्रद्धेय गुरुवर्य प्राचार्य डॉ. आनंद वासकरजी को देना ही श्रेयस्कर मानता हूँ। अपनी कार्य व्यस्तता के बावजूद आपने पग-पग पर मेरे लेखन की त्रुटियों को दूर करके मुझे सही दिशा में निर्देशन किया। आपके उदार एवं आत्मीय मार्गदर्शन से ही मैं इस शोध-कार्य की अंतिम मंजिल तक पहुँच सका हूँ। आपके प्रति अपनी कृतज्ञता शब्दों में प्रकट करना मेरे लिए संभव नहीं है। आपकी प्रेरणा, स्नेह और आशीर्वाद का मैं निरंतर अभिलाषी हूँ। डॉ. श्रीमती पुष्पा वासकरजी ने भी मुझे समय-समय पर सही दिशा दिखाकर इस शोध कार्य को पूर्ण करने की प्रेरणा दी। इस मार्गदर्शन के लिए मैं आपका कृतज्ञ हूँ।

शिवाजी विश्वविद्यालय के हिंदी विभागाध्यक्ष श्रद्धेय डॉ. पी. एस. पाटीलजी तथा श्रद्धेय डॉ. अर्जुन चव्हाण के सहयोग एवं मार्गदर्शन के लिए मैं कृतज्ञ हूँ।

इस शोध-कार्य को संपन्न बनाने में प्रा. आय. आर. मोरे [भोगावती महाविद्यालय, कुरुकली] डॉ. डी. के. गोंदुरी [डॉ. घाळी कॉलेज, गडहिंग्लज] तथा डॉ. वसंत मोरे [महासचिव, दक्षिण भारत हिंदी परिषद] आदि गुरुजनों के सहयोग एवं मार्गदर्शन के प्रति मैं कृतज्ञ हूँ।

शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर के बॅ. बाळासाहेब खर्डेकर ग्रंथालय के ग्रंथपाल, आचार्य जावडेकर शिक्षणशास्त्र महाविद्यालय, गारगोटी के ग्रंथपाल श्री सुर्वे, कर्मवीर हिरे महाविद्यालय, गारगोटी पळोकर ग्रंथालय के ग्रंथपाल श्री शिंदे, कर्मचारी स्वर्गीय सातापा मांगले आदि के प्रति मैं आभार प्रकट करता हूँ।

जब मैं लघु शोध-प्रबंध का अनुसंधान कर रहा था तब मेरी माता इंदूबाई, पिता रामचंद्र, बडा भाई रंगराव व उनकी पत्नि अनिता। उनके आशीर्वाद से ही कष्टों का सामना करते हुए मैं जीवन में आगे बढ़

रहा हूँ। उनके चरणों में मेरा यह संकल्प सादर अर्पित है।

यह लघु शोध-प्रबंध पूर्ण करने में मेरी पत्नि सुगंधा, उनकी सहेली नसीम मुजावर, मेरी बहन अंजना तथा मेरा मित्र संजय देसाई का काफी सहयोग एवं मार्गदर्शन रहा। उनके प्रति भी मैं कृतज्ञ हूँ।

इस लघु शोध-प्रबंध का टंकन श्री शरद जा. पाटील ने बड़ी लगन से किया है। अत: मैं उनका हृदय से आभारी हूँ।

इस कार्य को संपन्न बनाने में मेरे मित्र परिवार में जयवंत साळोखे, कृष्णात चव्हाण, बाबासो लुगडे, संजय जाधव, बाबासो भोपळे, शामराव रेडेकर, यशवंत पाटील, तथा आनंदराव मांगले आदि ने मुझे प्रोत्साहन एवं सहयोग दिया। अत: मैं उनके प्रति कृतज्ञ हूँ।

प्रत्यक्ष लघु शोध-प्रबंध को संपन्न बनाने में जिनसे भी प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप में प्रोत्साहन एवं सहयोग प्राप्त हुआ है, उन सभी के प्रति मैं हृदय से कृतज्ञ हूँ।

मैं उन कृतिकारों और विद्वानों के प्रति कृतज्ञ हूँ जिनकी सृजनात्मक और वैचारिक रचनाओं का उपयोग मैंने इस शोध-कार्य में किया है।

इस कृतज्ञता ज्ञापन के साथ मैं अपना यह लघु शोध-प्रबंध अत्यंत विनम्रता के साथ पाठकों तथा विद्वानों के सामने परीक्षणार्थ प्रस्तुत करता हूँ।

गारगोटी। शोध-छात्र,

तिथि : ३०.०६.१९९७. [श्री हिंदुराव रामचंद्र परमणकर

. . . . . .